



सप्तमांश कुंडली में गर्भ और लिंग निर्धारण के ज्योतिषीय सिद्धांत: एक पारंपरिक भारतीय दृष्टिकोण

रीना व्यास

शोधार्थी,

ज्योतिष विज्ञान विभाग, कला संकाय, जनादेन राय नागर विद्यापीठ, उदयपुर राजस्थान

सारांश :- यह शोध पत्र पारंपरिक भारतीय ज्योतिष में सप्तमांश (D-7) कुंडली के माध्यम से गर्भधारण की संभावना और संभावित लिंग निर्धारण की प्रक्रिया का अध्ययन करता है। जहाँ आधुनिक विज्ञान लिंग निर्धारण को आनुवांशिक तत्वों से जोड़ता है और गर्भ पूर्व लिंग परीक्षण पर कानूनी प्रतिबंध लगाता है, वहीं पारंपरिक भारतीय प्रणालियाँ जैसे ज्योतिष और आयुर्वेद ग्रहों की स्थिति को गर्भ और संतान के लक्षणों से जोड़ती हैं। यह अध्ययन *बृहत् पराशर होरा शास्त्र*, *चरक संहिता* और *मनुस्मृति* जैसे प्राचीन ग्रंथों के माध्यम से यह विश्लेषण करता है कि सप्तमांश कुंडली में विशेष रूप से पंचम भाव, चंद्र की स्थिति, और पुरुष व स्त्री ग्रहों की उपस्थिति संतान के लक्षणों का संकेत कैसे देती है। यह शोध पद्धति विवरणात्मक, ग्रंथ धारित और व्याख्यात्मक है तथा किसी प्रकार की पूर्वानुमानात्मक विधि नहीं अपनाता।

मुख्य बिंदु: ज्योतिष, सप्तमांश कुंडली, गर्भ निर्धारण, लिंग निर्धारण, पारंपरिक शास्त्र, नैतिकता, भारतीय ग्रंथ

भूमिका :- ज्योतिष या वैदिक ज्योतिष भारत की छः वेदांगों में से एक है और पारंपरिक ज्ञान परंपरा में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। सप्तमांश (D-7) कुंडली को ज्योतिष में संतान संबंधी विषयों की विवेचना हेतु प्रयोग किया जाता है। भारतीय परंपरा में संतान को केवल जैविक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक और कर्मजन्य प्रक्रिया माना गया है। वर्तमान वैज्ञानिक प्रवृत्तियों और कानूनी सीमाओं के परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक है कि हम इन ज्योतिषीय सिद्धांतों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विश्लेषण करें।

कार्यविधि :- यह अध्ययन गुणात्मक विश्लेषण पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में *बृहत् पराशर होरा शास्त्र*, *चरक संहिता* (शरीर स्थान), और *मनुस्मृति* जैसे ग्रंथों को शामिल किया गया है। इन ग्रंथों के श्लोकों का अनुवाद, व्याख्या, और तुलनात्मक विवेचन इस अध्ययन की आधार विधि है। साथ ही भारतीय गर्भ पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम, 1994 (PCPNDT) का कानूनी विश्लेषण भी किया गया है।

चर्चा :- अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पारंपरिक ग्रंथों में गर्भधारण को एक आध्यात्मिक, दैविक और जैविक समन्वय के रूप में देखा गया है। यह प्रक्रिया पूर्णतः निर्धारक नहीं बल्कि सांकेतिक और व्याख्यात्मक रही है। आधुनिक समय में लिंग चयन पर नैतिक और कानूनी आपत्तियों के चलते इन विधियों को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अध्ययन तक ही सीमित रखना आवश्यक है।

सप्तमांश कुंडली में गर्भ और लिंग निर्धारण के ज्योतिषीय सिद्धांत :- सप्तमांश एक महत्वपूर्ण वर्ग है। ये वर्ग मनुष्य के हार्मोन को प्रदर्शित करता है अर्थात् किस समय उसमें स्त्री भाव होता है और कब उनमें पुरुष भाव होता है यह दर्शाने के लिए यह बहुत सटीक कार्य करता है। **सप्तमांश** वर्ग की गणना के आधार पर यह बताया जा सकता है कि यह कुंडली किसी स्त्री की है अथवा पुरुष की। इसकी पृष्ठभूमि में गणितीय ज्ञान का होना परम आवश्यक है। मोटे तौर पर लग्न व चन्द्रमा किन **सप्तमांश** में है, इसका अध्ययन किया जाता है। इसी प्रकार इनके प्राण प्रतिष्ठा के समय लग्न व चन्द्र किन **सप्तमांश** के निकट है इसका अध्ययन किया जाता है। यह ज्ञात कर लिया गया है :-

➤ कि कोन से स्त्री पद है?

➤ कोने से पुरुष पद है?

पहले लग्न को परखा जाता है कि वह पुरुष पद में है या स्त्री पद में है। वैसे ही प्राण -प्रतिष्ठा में भी यह देखा जाता है। ऐसे ही यदि यह स्पष्ट हो जाए कि वह पुरुष पद में है तो जातक की कुंडली पुरुष की है और यदि स्त्री पद में है तो जातक की कुंडली स्त्री की होगी। यदि लग्न व चन्द्रमा के पदों में परिवर्तन हो यानि भिन्न हो तो चन्द्रमा के पदों में अधिक महत्व दिया जाता है। ऐसी स्थिति में चन्द्र पद जिसमें हो वही लिंग का निर्धारण करेगा। यहाँ ज्योतिष में राशि गत **सप्तमांश** ज्ञात करते हैं और तदनुरूप उसके बल को देखते हुए संतानोत्पत्ति की कल्पना करते हैं।

1	40	17	8.57
2	80	34	17.14
3	120	51	25.71
4	170	08	34.29
5	210	25	42.86
6	250	42	51.43
7	30		

सप्तमांश सारणी का क्रम इस प्रकार प्रारम्भ होता है :-

मेष वृषभ मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन

1 8 3 10 5 12 7 2 9 4 11 6

सप्तमांश चक्र अनुसार देखे तो सम और विषम राशि की शुरुआत विषम से सम राशि अनुसार विषम की शुरुआत विषम से और सम राशि की शुरुआत सम राशि से हो रही है। यदि किसी राशि के सात विभाजन के प्रथम खण्ड में $4^{\circ} 17'$ दूसरे खण्ड में $4^{\circ} 35'$ तीसरे खण्ड में $12^{\circ} 42'$ और सप्तम खण्ड में 30° तक रहता है। पहले के तीन खण्डों में सम संख्या में अंशों का विभाजन हो रहा है और बाकी में विषम संख्या से हो

रहा है। विशिष्ट अंश - 4-8-12-17-21-25 होता है सप्तमांश इन्हीं अंशों में होते हैं लिंग के अध्ययन में यह बात ध्यान में रखनी होती है कि -

- लग्न अथवा चन्द्र में से कोन विशिष्ट अंशों में है अथवा अंशों के निकट है (सवा डिग्री दोनों तरफ निकट माना जाता है) या प्राण प्रतिष्ठा के समय लग्न व चन्द्र दोनों विशिष्ट अंशों मध्य है।
- दोनों विशिष्ट अंशों पर नहीं है;
- एक विशिष्ट अंशों पर है दुसरा नहीं है उसके बाद लिंग का निर्णय किया जाता है उसके बाद ही लिंग का निर्णय किया जाता है।

यह साधारण नियम है लग्न व चन्द्र, दोनों में लिंग समान आते हैं तो लिंग स्पष्ट है यदि लग्न से चन्द्र से भिन्न-भिन्न लिंग आए तो चन्द्र वाले को महत्ता देनी है। विशिष्ट अंशों में लग्न अथवा चन्द्रमा होने पर प्राण प्रतिष्ठा में बहुत बड़ा अंतर आ जाता है। ऐसे में कोनसी प्राण प्रतिष्ठा सही होगी इसे जांचने के लिए यह लिंग निर्धारण वाला नियम सिद्ध होता है (यहां लग्न सप्तम बन जाएगा व चन्द्रमा में 6 राशि जोडनी पड़ेगी)

प्राण-प्रतिष्ठा का लग्न :- (1) यदि लग्न अंश पुरुष डिग्री में है तो जन्म का लिंग पुरुष होगा का यदि स्त्री अंशों में है तो लिंग स्त्री होगा।

2) यदि चन्द्रमा विशिष्ट अंशों में हो ओर लग्न विशिष्ट अंशों में ना हो तो चन्द्रमा की स्थिति लिंग का निर्धारण करेगी।

3) यदि लग्न व चन्द्रमा दोनों विशिष्ट अंशों में हो तो जन्म उसी लिंग का होगा।

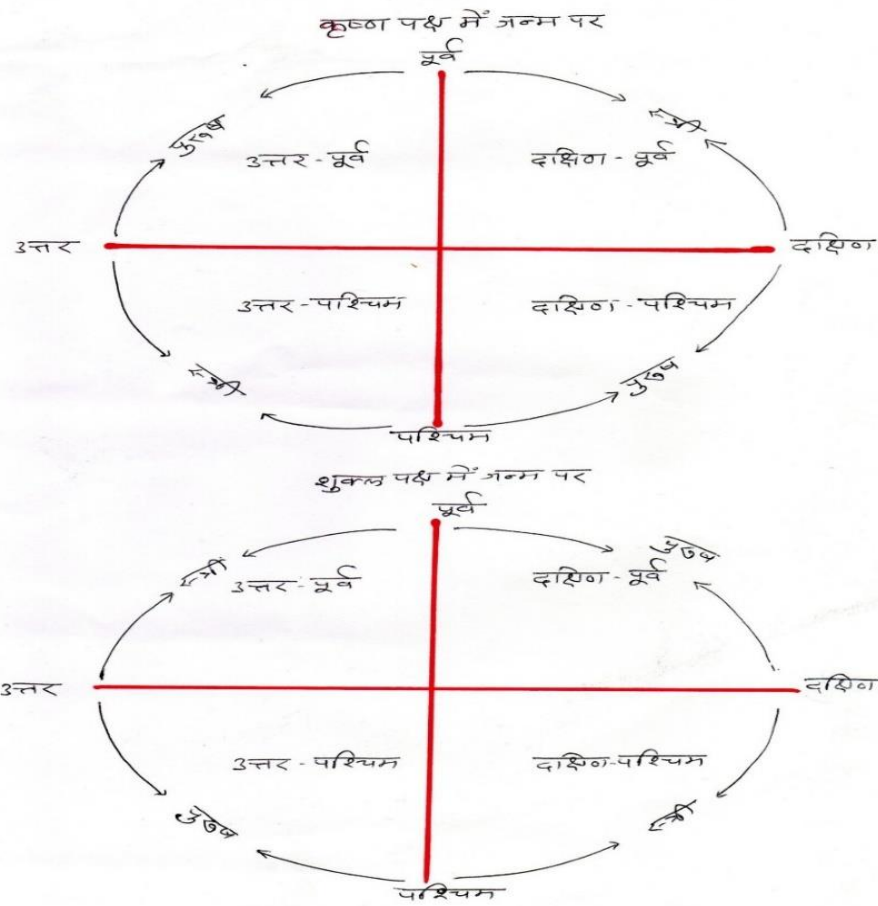
4) यदि लग्न व चन्द्रमा दोनों विशिष्ट अंशों में ना हो तो चन्द्रमा जिस चतुर्थांश में स्थित है, यह लिंग का निर्धारण करेगा।

चतुर्थांश यानि चार राशिओं के आधार पर यदि बात करे तो मेष, कर्क, तुला, मकर ये मुख्य राशियाँ आती हैं। केन्द्र भाव मान सकते हैं जिनका अंतर 90°-90° का है।

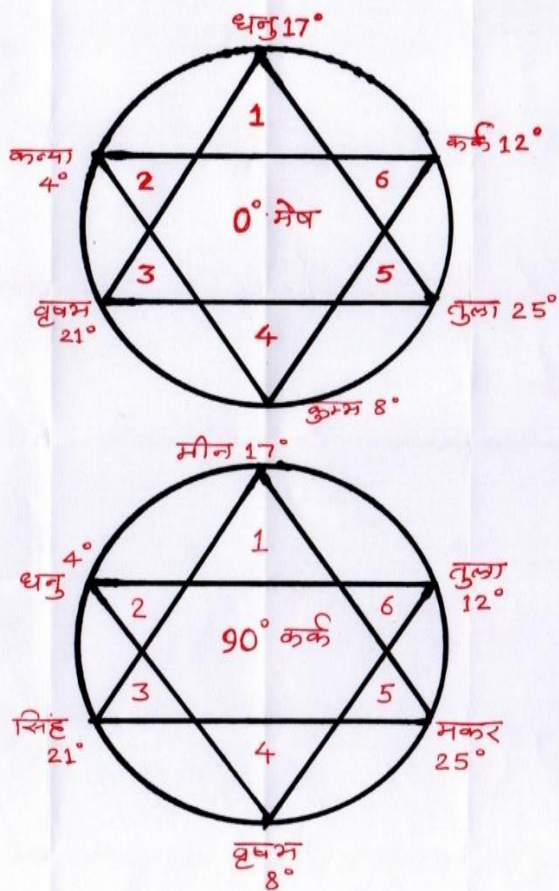
कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो लग्न व चन्द्रमा का सप्तम भाव गर्भ प्रतिष्ठा के समय होंगे। लिंग का निर्धारण गर्भ के पाँचवें महीने से होता है जो चन्द्रमा व लग्न की स्थितियों पर निर्भर करता है।

सूत्र-

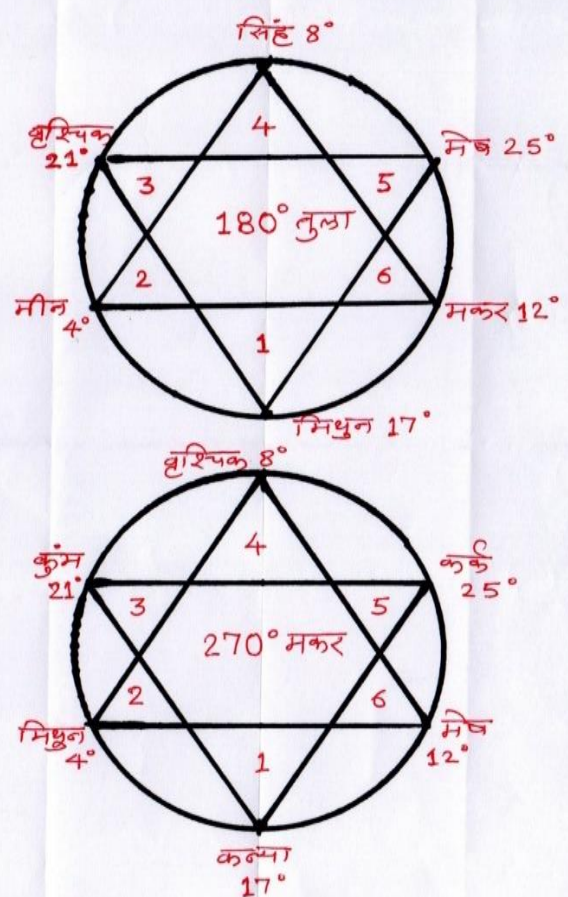
- 1- शुक्ल पक्ष का जन्म हो और दिन का समय हो तो 279 दिन से अधिक गर्भ रहा होगा।
- 2- शुक्ल पक्ष का जन्म हो और रात का समय हो तो 279 से कम का गर्भ रहता है।
- 3- कृष्ण पक्ष का जन्म हो ओर दिन में हो तो 279 दिन से कम का गर्भ रहता है।
- 4- कृष्ण पक्ष का जन्म हो और रात में हो तो 279 दिन से अधिक का गर्भ रहता है।
- 5- शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो आधान लग्न (गर्भ में प्राण प्रतिष्ठा) जो जन्म कुंडली में चन्द्रमा होता है और जो लग्न होता है वो उसका चन्द्र होगा
- 6- कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो सप्तम भाव में जो राशि अंश कला है वो उसका चन्द्रमा होगा और (प्राण आधान) वो उसका चन्द्रमा होगा या चन्द्रमा से सप्तम भाव में जो राशि है वो भी हो सकता है।

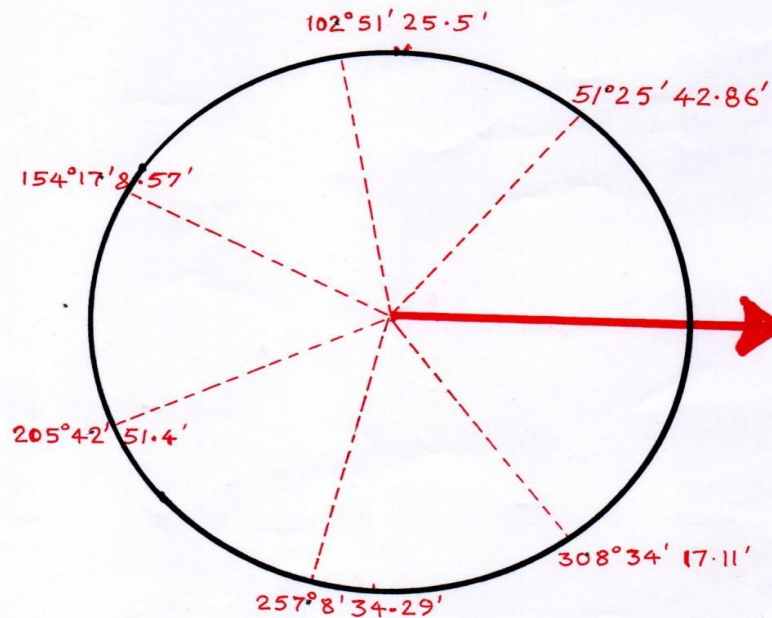


॥ शुक्ल पक्ष ॥

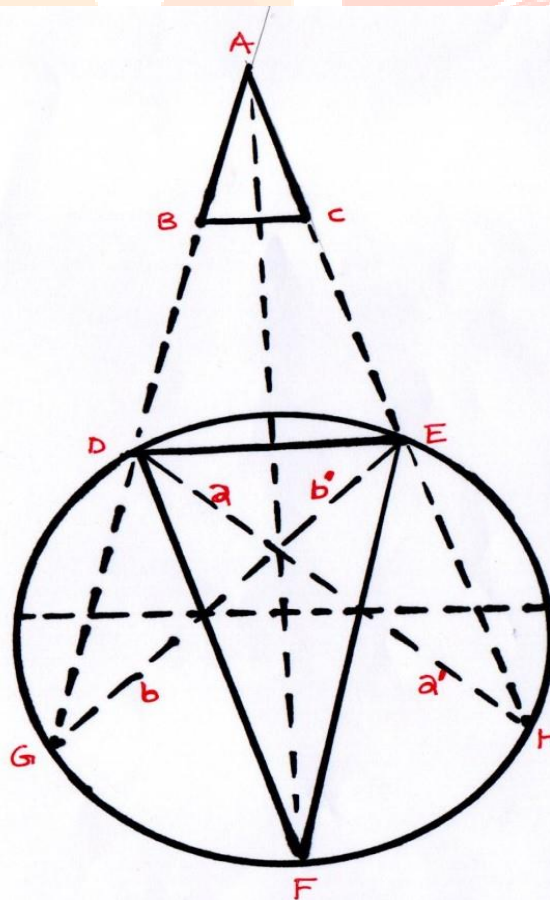


॥ कृष्ण पक्ष ॥





गर्भ में लिंग निर्धारण :- वास्तव में हर राशि के 7 चक्र उक्त प्रकार होते हैं, संतान का निर्धारण दृष्टिगत है। पुरुष व स्त्री का निर्धारण 5 महीने में होता है। यदि सप्तमांश के अंश 0, 4, 8, 12, 17, 25 है। लगभग 17 का एक अंश होता है यह कभी कम ओर ज्यादा होता है यह राशि पर निर्भर करता है। इन डिग्री को दो त्रिकोण या त्रिभुजों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है, सीधा वाला पुरुष है ओर उल्टा बाला त्रिभुज स्त्री का ।



जातक के लिंग का निर्धारण इस तरीके से किया जाता है। ABC द्वारा दर्शाया गया त्रिकोण पुरुष महिला क्षमता को इंगित करता है – जिसमें

- AB- पुरुष
- AC-महिला
- BC- प्लाज्मिक पदार्थ में

गर्भधारण के बाद पाँचवें महीने में क्षमता सक्रिय क्षमता में बदल जाती व त्रिभुज - ABC तब त्रिभुज - DEF में परिलक्षित होता है। जहाँ DF - पुरुष; EF- महिला हो DE प्लाज्मिक पदार्थ। जिसमें चतुर्थांश aa' पुरुष है। bb' महिला है। जब नर शक्ति DF स्त्री EF पर हावी हो जाती है तो लिंग की दिशा चतुर्थांश b तक विक्षेपित होती तब एक पुरुष का जन्म होता है। लेकिन जब स्त्री शक्ति EF पुरुष DF पर हावी हो जाती है तो परिणाम चतुर्थांश b तक विक्षेपित होता है तो एक स्त्री का जन्म होता है। पाँचवें महीने में यह f विक्षेपित होता है तो यह दायें या बायें चला जाता है यह सप्तमांश से तय होता है।

सप्तमांश का महत्व :- वृत्त पाराशर होरा शास्त्र में वर्ग कुंडलियों को बहुत अधिक महत्व देते हुए यह कहा गया है कि कोई भी भविष्यवाणी बिना वर्ग कुंडली के उपयोग किये अधूरी है। अतः कुंडली में राशि के फलादेश की सटीक व सूक्ष्म करने के लिए वर्गों का आविष्कार हुआ। वर्ग कुंडलियाँ जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से को दर्शाती हैं। इन वर्गों का अलग महत्व व भूमिका है। जीवन के विभिन्न भागों जैसे-विवाह, नौकरी, पढ़ाई, संतान, धन इत्यादि पाराशर जी के अलग-अलग वर्ग कुंडलियों का उल्लेख किया है। वर्ग कुंडलियों में सात वर्गों के सामूहिक विश्लेषण का सप्तवर्गीय विश्लेषण कहा गया है इन सप्तवर्गों में निम्न शामिल हैं :-

- (1) जन्म कुंडली
- (2) होरा कुंडली
- (3) द्रेष्काणा कुंडली
- (4) सप्तमांश कुंडली
- (5) नवमांश कुंडली
- (6) द्वादशांश कुंडली
- (7) त्रिंशांश कुंडल

सप्तमांश वर्ग में एक राशि 30° के सात भाग किये जाते हैं प्रत्येक भाग 4 अंश 17 कला 8 विकला का होता है। सप्तमांश में विषम राशियों की गणना उसी राशि और सम राशि की गणना उससे सातवीं राशि से करते हैं। ये “स्यात्सप्ताशे संतति पूत्र पोत्री” अर्थात् संतान सुख, संतान पुत्र है या पुत्री इसका विचार सप्तमांश कुंडली से किया जाता है। इस हेतु गणितीय ज्ञान होना अति आवश्यक है।

निष्कर्ष :- सप्तमांश आधारित लिंग विश्लेषण भारतीय सांस्कृतिक दर्शन और वैदिक ज्ञान की गहराई को प्रतिबिंबित करता है। यद्यपि यह आधुनिक अनुवांशिकी विज्ञान से मेल नहीं खाता, फिर भी यह ज्ञान प्रणाली दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि से मूल्यवान है। इसका प्रयोग पूर्ण जिम्मेदारी और कानूनी सीमाओं में रहकर ही किया जाना चाहिए। सप्तमांश कुंडली में प्रत्येक राशि को सात भागों में विभाजित किया जाता है, जिनसे संतान से संबंधित संभावनाएं देखी जाती हैं। प्रमुख निष्कर्ष:

- पुरुष संतान के संकेतक: सूर्य, बृहस्पति, मंगल का पंचम भाव या लग्न पर प्रभाव
- स्त्री संतान के संकेतक: शुक्र और चंद्र का प्रभाव
- सम और विषम तिथि व नक्षत्र भी लिंग निर्धारण में महत्वपूर्ण माने गए हैं

- चरक संहिता में शुक्र और शोणित की प्रधानता के आधार पर लिंग निर्धारण का उल्लेख

संदर्भ सूची :-

- 1- पराशर. (2020). बृहत् पराशर होरा शास्त्र (संस्कृत-हिन्दी अनुवाद). चौखम्भा प्रकाशन।
- 2- चरक. (2020). चरक संहिता – शरीर स्थान (डॉ. जी. डी. सिंह द्वारा अनुवादित). चौखम्भा ओरिएंटलिया।
- 3- भारत सरकार. (1994). गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग चयन निषेध) अधिनियम. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय।
- 4- वराहमिहिर. (2005). बृहत् जातक. मोतीलाल बनारसीदास।
- 5- मनु. (2019). मनुस्मृति - मेधातिथि टीका सहित. मोतीलाल बनारसीदास।
- 6- SEPHARIAL – THE NEW MANUAL OF ASTROLOGY, LONDON

